"हस्ताक्षर"

'खोया हुआ सपना'

"बेटा तुम कैसे हो ठीक हो ना?
अगर ठीक नही भी हो फिर भी
मुझे बस सुनना है की तुम ठीक हो।
लिखने केलिए जरूरी बात कुछ नही
इस बूढ़ी औरत को क्या ज़रूरी बात
बताने केलिए होगा। तुम्हे पता हेना
मुझे इस तरह खत लिखने थे
पढने का कोई शौक नही है
इसलिए में तुम्हारे भाई से पत्र
लिखवाती हूँ। और उससे भी ज़रूरी
एक खत लिखना बिना तुम्हारे पिता
के जाने। ये सब में तुम्हें दुखी
करने के लिए नही कह रही।
इसलिए कह रही हुँ की तुम जानो
कितनी मुशकिल से में खत लिखके
तुम्हे भेजती हुँ। में नही जानती की

कैसे तुम्हें बताऊँकी तुम्हारे जाने के बात तुम्हारी पिता की हालत । टूट चुके है वो बिचारे इनसान । जो भी तुमने उस दिन किया सिर्फ उनका दिल दुखाया है । ये सब छोडो मेरी छोटी कैसी है ? तुम्हारे अजीब तरह के मोडेर्न नाम पुकारना मुझे नही आता । मेरी छोटी को देखना चाहती पर होगा कैसे तुम आती तो हो नही । कैसे देखूगी अपनी प्यारी बेटी को ? तुम घर नही ~~आये~~ आ सकती ऐसा हमने नही कहाँ है ना । पर मैं इसलिए नही बुलाती क्योंकी तुम ऐसा ना सोचो की हम तुम पर तरस खा रहे है । कभी नही समझोगी तुम हमारा प्यार । जैसा भी हो तुम खुशाल रहो ।" इतना पढते ही

उसकी आँखे भर आयी होट
कापने लगे सब कुछ खोया सा
लगा। सारे सपने जो उसने
अपने पत्नी के साथ देखे थे
वो उसके छूते ही गायब हो गये।
अपनी माँ की खत ही आज उसका
सहारा है। उन खतों को वो संभाल
के रखती थी। उस दिन जब वे
अपने माँ-बाप की सपनो ~~कब्र~~ पर
पानी फेर दिया। अपने सपनो केलिए
शायद। उस दिन जब वो घर से
उसकी प्रेमक के साथ एक नयी
दुनिया को खोजते हुए उस लड़के
दोस्तों की बीच निकल पड़ी थी तब
उसके माँ-बाप की रोने की
आवाज़ ने उसके अभिप्राय को ना
बदला। शायद उस दुनिया में पाँव

रखने की जल्दी थी। वो लड़का जो उसके जाती का नही था और जो शराबी था वो लड़का उस लड़की के लिए अपने माँ-बाप से भी ज़ादा कीमती था। शादी के बाद खिले बसंत के फूल जल्दी ही मुरझाकर सूख गये थे। उस लड़के उस लड़की को एक आखरी तोफा दिया। एक बच्ची - 'दोठी'। वो अपने नानी पर गई है। वो लड़की जो अपने पती के एक आक्सीडेन्ट के मौत के बाद माँ के लिखे गये खतो का सहारा लेने लगी। उस लड़की का जीने का कारन आखिर माँ के खतों तक ही बस सीमित थी। एक लड़की होने के नाते अपनी बच्ची का ध्यान रखना थोड़े-थोड़े उस

केलिए भोज बनने लगा। वो अपने माँ के खतों के बल पर अभी भी ज़िंदा है। उस खतों में बार-बार पढ़ने की महक बरकरार रही थी। ~~आव~~ अब वो खतों का सहारा खतम हो गया था। उन खतों में ही वो अपना अभय लेती थी। आज जब उनका आना बंद हुआ तब जीने का अर्थ शून्य हो गया। अपने पिता की कही वो बात तब उसके मन में आयी। "बेटा, तुम किधर हो, क्या कर रही हो इनसबसे ज़्यादा कैसी हो पर निरभर करता है। अगर जो कर रही तुम्हे अच्छा नही लगता तो छोड़ दो। जो भी है जैसा भी ठीक है। बस अपने अपने

केलिए मेहनत करो। जैसे मैं कर रहा हूँ।"

तब उस दस साल की लड़की को क्या समझ आयेगा सिर्फ उस उम्र में बात से वापस पूछा की "क्या है आपका सपना?" "तेरी शादी।" इससे अलावा उन्होंने कुछ ना कहा। आज इस समय वो जानती है की मेरे जन्म से जो सपना पापा ने देखा। उसने उसे चूर-चूर कर दिया। क्या बीती होगी उन पर। ना अपना ना पापा ना माँ का ना अपनी बच्ची, किसी का भी सपना वो पूरा ना कर सकी थी। सबके सपनों का अंत उसके हाथों से हुआ। माँ के बिना उसे इस ज़िंदगी को पापा कहे

जैसे 'अगर नही चाहती तो कर रही हो वो छोड़ दो।' क्या फैसला सब छोड़ने का। जो सपना अपने पत्नी के साथ एक अच्छी नयी जिंदगी का देखा था वो छोड़ निश्चय देना पड़ा। अपनी बच्ची के लिए वो आखिर कुछ करना चाहती थी। फिरसे वे सोचने लगी वो दिन जब वो अपने पत्नी के साथ उसके घर आये तब से आज तक खुशी का अनुभव ना पाया। सारे सपने कुचल दिये गये। वो लड़का इतना भी अच्छा नही हर रात उसके दोस्त भी उसके साथ आते। शराब की लहरी में बिलकुल अंधे थे वह लोग। कैसे वो रात बीतते थे वो उसे

नही पता क्या। बेटी होने के बाद उसे काम घरों में जाना पड़ा पत्नी ने सब कुछ बेच दिया पैसो केलिए कभि - कबार उसे भी। सारी रात रोते कुज़रती थी। एक भी अच्छा दिन फिर उसके ज़िंदगी में नही आया।' वो जल्दी से सोच से बाहार आयी। एक पेपर लिया एक कलम लिया और एक खत लिखा जो दो ज़िंदगी बदलेंगे उसकी बेटी की और उसके पापा की। एक पहला और आखरी खत अपने पिता के नाम। क्या होगा कैसे होगा कुछ नही जानती शब अपने पापा की बल पर छोड़रही है। कहाँ अपनी बेटी से "नाना

से मिलने समय आ गया। वो
बहुत अच्छे इन्सान है।
छोटी तुम्हे उनका ध्यान रखना
है और उनको प्यार करना है।
बिलकुल पापा के समान। उन्हें
अपनी पूरी ज़िंदगी में दुखी मत
करना ठीक है?" अब लिखना
शुरु किया।

" प्रिय पापा, आप कैसे
हो जानती हुँ की मेने आपको
बहुत चोट पहुँचाया। आपका सपना
खराब कर दिया। माँ के जाने
के बाद आपकी हालत ओर
भी खराब हो गयी होगी। पर
शायद मेरी जितनी नही। माँ
और माँ के खत मेरे जीने का
सहाय थे अब वो नही रहे तो

मेरे जीने का क्या फैदा होगा ? इसलिए मैने एक फैसला लिया है हमेशा मेरे सारे फैसलों ने आपको छोट पहुँचाया है। पर इस बार शायद आखरी बार मैं आपको दुखाने वाली हुँ। आप कहते थे की मैं आपकी परी हूँ ना। मेरी एक बेटी है। माँ उसे छोटी कहकर बुलाती थी। वो भी बिलकुल परी जैसे है। वो आपसे मिलना चाहती है। क्या आप उसका ध्यान रखेंगे। वो कभी भी आपको दुखी नही करेगी वो मेरा वादा है। माँ के बिना मैं सच मे नही जी सकती। मैं जा रही हुँ हमेशा केलिए इस दुनिया से। आपकी परी प्यार से छोटी की माँ हस्ताक्षर !

कहानी का गुण पाठ

जीने के अनेक कारण है। पर कभी कारण केलिए जीना नही छोडना। सपने भी अनेक है पर सपनो केलिए मरना ठीक नही है। और अपने सपनो केलिए दूसरों के सपनों को कभी कुचलें मत। सारे लोग किसी ना किसी सपनो के बल पर जीते है। अगर हम किसीके सपनो के अंत के कारण बनते है तो एक इन्सान के मौत के भी कारण बन जाएगे। तो जीना है तो कुछ दूसरों केलिए और हमारे लिए और अनके और हमारे सपनो केलिए जीए।

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)